International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 02(II), April - June, 2024, pp. 299-306

# सतत् विकास लक्ष्य एवम् गांधी दर्शन

मांगीलाल*
प्रोफेसर सोहनलाल मीणा**

## सार

*गांधी ने हमें व्यावहारिक तौर पर राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय दृष्टि से एक स्थायी रास्ता दिखाया है जिसकी उन्होंने सत्य के साथ अपने प्रयोगों के साथ रूपरेखा तैयार की थी और यह भावी पीढ़ियों की जरूरतों के संबंध में थी। उनके प्रयोगों ने एक समय पर ताकतवर ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ें हिला दी थीं और इसके परिणामस्वरूप बहुत सारे एशियाई और अफ्रीकी देशों की आजादी और स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त हुआ था और अब यह मानवता को हथकड़ियों से आजादी दे रहे हैं जिनसे यह जकड़ी हुई है। लाखों–करोड़ों लोगों ने उन पर भरोसा किया और उनका चरखा एक ब्रह्मास्त्र बनकर गांवों में मुक्त उद्यम का प्रतीक बन गया। अपने दिमाग में उन्होंने ग्राम स्वराज्य की कल्पना को साकार किया। इसका यह मतलब था कि बाजरा, ज्वार, जवारी, रागी की खेती की जाए जिनमें कम पानी लगता है और ये भूमि को उपजाऊ बनाती हैं। गाय और बकरियां, जो कि घर के बचे और छोड़े हुए खाने पर पल जाती हैं, को पाला जाए जिससे लोगों और प्रकृति, पर्यावरण के बीच सामंजस्य का प्रतीक रूप सामने आए। साथ ही, उन प्रजातियों के साथ रहें जिनके साथ हम पृथ्वी साझा करते हैं। 5 दिसंबर 1929 के यंग इंडिया में उन्होंने लिखा कि "यदि भारतीय समाज को शांतिपूर्ण मार्ग पर सच्ची प्रगति करनी है, तो धनिक वर्ग को निश्चित रूप से स्वीकार कर लेना होगा कि किसान के पास भी वैसी ही आत्मा है, जैसी उनके पास है और अपनी दौलत के कारण वे गरीब से श्रेष्ठ नहीं हैं. किसानों के जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए वह स्वयं अपने को दरिद्र बना लेगा. वह अपने किसानों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करेगा और ऐसे स्कूल खोलेगा, जिसमें किसानों के बच्चों के साथ साथ अपने खुद के बच्चों को भी पढ़ायेगा"। इसी तरह वर्तमान यूएनओ महासचिव गुटेरेस ने कहा कि गांधी ने हमें किसी नीति और वास्तव में किसी भी कार्य का निर्णय करने के लिए एक तिलिस्म दिया है – यह आकलन करने के लिए कि क्या प्रस्तावित कार्य हमसे मिले सबसे गरीब व्यक्ति के जीवन, सम्मान और भाग्य को बढ़ाएगा। एमडीजी या एसडीजी के पूर्व स्वच्छता, मातृ स्वास्थ्य, प्राथमिक शिक्षा, लैंगिक संतुलन, महिला सशक्तीकरण, भूख में कमी और विकास के लिए साझेदारी सुनिश्चित करना गांधी के जीवन और अभ्यास के आधार थे। वास्तव में, सतत विकास लक्ष्य पर कार्रवाई गांधीवादी दर्शन हैं। इसका मतलब है कि हमें मिट्टी और इसके बहुमूल्य सूक्ष्म जीवों, केंचुओं को नष्ट करने वाले रसायनों की जरूरत नहीं है। हमें कीटनाशकों की जरूरत नहीं है, जो कि पौधों, जैवविविधता को सुरक्षित रखने वाले हितैषी जीवन के रूपों को नष्ट करें। सैकड़ों वर्षों की अवधि में बने कुओं और जल संसाधनों को पानी देने वाले प्रकृति के जलदायी स्तरों की जरूरत है, बोरवेल्स की नहीं, जो कि बहुत छोटी पानी की नालियों को, पानी और इसके पौष्टिक चक्र को तोड़ते हैं। 'टर्मिनेटर' बीजों और जीएम पौधों की जरूरत नहीं है, जो कि जीवन को अलग कर देते हैं और जो पौधों, और मानव जीवन को नष्ट कर देंगे, मार देंगे।*

***शब्दकोश:*** *सतत् विकास,जैव विविधता, विकास, सतत् विकास लक्ष्य, गाँधीवाद,ग्राम स्वराज, लैंगिक संतुलन।*

---

* रिसर्च स्कॉलर, राजनीति विज्ञान विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।
** पूर्व विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।

## प्रस्तावना

*"पृथ्वी हर मनुष्य की जरूरत को पूरा कर सकती है, परंतु पृथ्वी मनुष्य के लालच को पूरा नहीं कर सकती है।"*

–महात्मा गांधी

विकास के साहित्य में सतत विकास की महत्वपूर्ण भूमिका और स्थान है। सतत विकास विकसित और विकासशील दोनों देशों के विकास विशेषज्ञों, पर्यावरणवादियों और राष्ट्रीय नेताओं के बीच तर्क–वितर्क और बातचीत का केंद्र रहा है। सतत विकास, जून 1992 में ब्राजील (Brazil) में आयोजित पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (United Nations Conference on Environment and Development & UNCED) का एक प्रमुख केंद्रित विषय था।

सतत विकास एक बहुआयामी अवधारणा है। इसकी व्याख्या एवं समझ प्रायः संदर्भ की विशिष्टता के अनुसार होती है। इस अवधारणा का उदय राष्ट्रीय, सामुदायिक अथवा वैयक्तिक स्तरों पर सामाजिक एवं आर्थिक प्रणालियों, नीतियों, कार्यक्रमों तथा गतिविधियों में परिवर्तन की वांछित दिशा पर बहस तथा निर्णय लेने के लिए एक बृहत रूपरेखा के रूप में हुआ। सतत विकास सामाजिक आर्थिक विकास की प्रक्रिया है जिसमें पृथ्वी की ग्रहण क्षमता की सीमाओं के अन्दर विकास की बात की जाती है। यह अवधारणा 1960 के दशक में तब विकसित हुई जब लोग औद्योगीकरण के पर्यावरण पर हानिकारक प्रभावों से अवगत हुए। धीरे–धीरे यह 1990 के दशक की सर्वाधिक महत्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक अवधारणा बन गई। आज के समय में यह अवधारणा अन्तर्राष्ट्रीय विकासवादी सम्मेलनों तथा कार्यक्रमों की सर्वाधिक राजनीतिकृत नारा बन गई है।

## सतत् विकास लक्ष्य

सतत विकास शब्द का प्रयोग 1980 में के दशक के अंत में ब्रुंडलैंड रिपोर्ट (1987)के एक प्रकाशन में "हमारा सांझा भविष्य" "ल्नत बवउउवद निजनतम" में किया गया था। संयुक्त राष्ट्र द्वारा गठित आयोग के विकास के लिए परिवर्तन हेतु वैश्विक प्रारूप का प्रस्ताव पारित किया गया। इस रिपोर्ट ने हमारे रहन–सहन एवं शासन ने पुनर्विचार की आवश्यकता पुनर्विचार की आवश्यकता पर जोर दिया गया संयुक्त राष्ट्र और उसकी एजेंसियों, और कई अंतरराष्ट्रीय संस्थान और आयोग और विश्व नेता सतत विकास के महत्व को समझते हैं। वे निर्णायक दृष्टिकोण के हैं, जो वर्तमान जरूरतों को पूरा करने के लिए पृथ्वी के संसाधनों का मूल्य घटा रहे हैं, जोकि भावी पीढ़ियों के लिए विनाशकारी हैं। क्या भविष्य की पीढ़ियों को और न केवल वर्तमान पीढ़ियों को, उन पृथ्वी संसाधनों की आवश्यकता है? और वे क्या उत्पादन करेंगे। अत्यधिक खेती, जंगलों का विनाश, आर्द्रभूमि को भरना, सभी कुछ जनसंख्या विस्फोट से चालित हो रहा है। यह अंततः उन्हें स्वयं नवीनीकृत करने के लिए तथाकथित नवीकरणीय संसाधनों की क्षमता को नुकसान पहुंचा रहे हैं। वे निरंतर आगे उत्पादन नहीं कर सकते। एक निश्चित स्तर से परे, वर्तमान में केवल अधिक प्राप्त करने की आकांक्षा भविष्य के लिए उत्पादन को समाप्त कर देगी। सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए प्रशासन के विषय में यह कहा जा सकता है कि हमारे बच्चे और आने वाली पीढ़ियों को एक ऐसी पृथ्वी विरासत में मिलेगी जो केवल न्यूनतम है– और हमारे आज से खराब नही। यह शायद महान और उच्चतम आकांक्षाओं में से एक है, जो हमें स्वयं को मनुष्यों के रूप में तैयार कर सकते हैं। विश्व भर में हो रहे परिवर्तनों को देखते हुए, यह व्यापक रूप से अनुभव किया जा रहा है कि जिस तरह की दुनिया हम अपने बच्चों और पोतों के लिए वसीयत करेंगे, पर्यावरणीय गिरावट के परिणामस्वरुप बेहतर नहीं हो सकती हैं, जो कि आज किए गए राजनीतिक और आर्थिक फैसलों के परिणामस्वरूप होता है। गंभीर चिंता का विषय यह है कि जो लोग आज आर्थिक विकास का लाभ ले रहे हैं, वे भविष्य की पीढ़ियों को अत्यधिक नुकसान पहुंचा सकते हैं और प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुंचा सकते हैं और नष्ट कर सकते हैं और पृथ्वी के पर्यावरण को प्रदूषित कर सकते हैं।

वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की 70वीं बैठक में '2030 सतत् विकास हेतु एजेंडा' के तहत सदस्य देशों द्वारा 17 विकास लक्ष्य अर्थात् एसडीजी (Sustainable Development goals & SDGs) तथा 169 प्रयोजन अंगीकृत किये गए हैं। वर्तमान में खेत बंजर हो रहे और जंगल हो रहे हैं इस स्तर की प्राकृतिक आपदाएं का

सामना मानव सभ्यता ने अपने कुल इतिहास में आज तक नहीं किया है. संयुक्त राष्ट्र की संस्था विश्व मौसम विज्ञान संगठन की एक ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, इंसानों ने जंगलों को उजाड़ कर और जीवाश्म ईंधन को जलाकर वातावरण को गर्मी रोकने वाली गैसों से भर दिया है. इससे जलवायु अनिश्चित हालात में चली गई है। मानव सभ्यता के इतिहास में ऐसा पहले कभी नहीं देखा गया था. स्टेट ऑफ द क्लाइमेट रिपोर्ट 2021 के अनुसार, साल 2021 में दुनिया में ग्रीनहाउस गैस की सघनता का रिकॉर्ड टूट गया है. महासागरों में तापमान और अम्लीयता का स्तर काफी बढ़ गया है. बेतहाशा बारिश, बर्फ, बाढ़ और भूस्खलन से खरबों रुपये का नुकसान हुआ है. जलवायु परिवर्तन की वजह से तीव्र तूफान और जंगल में आग लगने की घटनाओं बहुत बढ़ गई हैं. लोगों को मजबूरन अपना घर–बार छोड़कर दूसरी जगहों पर विस्थापित होना पड़ा है।

2015 में जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए पेरिस समझौता हुआ था. इसके तहत दुनिया के देशों ने सदी के आखिर तक धरती के तापमान में वृद्धि को पूर्व–औद्योगिक स्तर से 1.5 डिग्री सेल्सियस ज्यादा तक बनाए रखने की कोशिश करने पर सहमति जताई थी. लेकिन दुनिया भर के सरकारों का जो रवैया है, उससे यह सदी खत्म होने तक धरती 2.7 डिग्री सेल्सियस गर्म हो सकती है। असहनीय गर्मी की वजह से भारत में फसलें झुलस गई हैं. विशेषज्ञों के अनुमान के मुताबिक, गर्मी ज्यादा पड़ने से भारत में इस साल गेहूं की पैदावार करीब 25 प्रतिशत कम हुई है. अगर यही हाल रहा तो ना खाने को अनाज मिलेगा, ना सांस लेने के लिए साफ हवा।

1987 में ब्रुंडलैंड कमीशन रिपोर्ट के सामान्य भविष्य के विचार से बहुत पहले ही महात्मा गांधी ने स्थिरता और सतत विकास के लिए लगातार बढ़ती इच्छाओं और जरूरतों के अधीन आधुनिक सभ्यता के खतरे की ओर ध्यान दिलाया था। अपनी पुस्तक "द हिंद स्वराज" में उन्होंने लगातार हो रही खोजों के कारण पैदा हो रहे उत्पादों और सेवाओं को मानवता के लिए खतरा बताया था। उन्होंने वर्तमान सभ्यता को अंतहीन इच्छाओं और शैतानिक सोच से प्रेरित बताया। उनके अनुसार, असली सभ्यता अपने कर्तव्यों का पालन करना और नैतिक और संयमित आचरण करना है। उनका दृष्टिकोण था कि लालच और जुनून पर अंकुश होना चाहिए। टिकाऊ विकास का केंद्र बिंदु समाज की मौलिक जरूरतों को पूरा करना होना चाहिए। इस अर्थ में उनकी पुस्तक "द हिंद स्वराज" टिकाऊ विकास का घोषणापत्र है। जिसमें कहा गया है कि आधुनिक शहरी औद्योगिक सभ्यता में ही उसके विनाश के बीज निहित है।

**एसडीजी लक्ष्य**

- **एसडीजी 1 :सब जगह गरीबी का इसके इसमें सभी रूपों में अंत करना**

"मैं तुम्हें एक जंतर देता हूं। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम तुम पर हावी होने लगे तो यह कसौटी अपनाओ, जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने हृदय से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिये कितना उपयोगी होगा, क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर काबू रख सकेगा ? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त.. तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम समाप्त होता जा रहा है....जब तक एक भी सशक्त आदमी ऐसा हो, जिसे काम न मिलता हो या भोजन न मिलता हो, तब तक हमें आराम करने या भरपेट भोजन करने में शर्म महसूस होना चाहिए।"

- **एसडीजी 2: भूखमरी समाप्त करना खाद्य सुरक्षा और बेहतर पोषण हासिल करना तथा सतत् कृषि कों बढावा देना**

जब गाँधीजी भारत में कांग्रेस के पहले अधिवेशन में पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि शिविरों के पाखाने गन्दे और उपेक्षित पड़े हैं। पूछने पर कार्यकर्ताओं ने बताया कि उनकी सफाई का काम भंगियों का है, जिन्हें उल्टे तब अछूत भी कहा जाता था। गाँधीजी ने इस तर्क तो तत्क्षण अस्वीकार कर दिया और स्वयं बाल्टी झाडू – लेकर सफाई में जुट गए। इस तरह 'जंतर' ने दूसरा संदेश दिया, कि सबकी गंदगी उठाने वाला मनुष्य नीच नहीं। वह

तुम जैसा है, समान है। साथ ही यह भी कि सेवा या रचनात्मक कार्य दूसरों को उपदेश देकर नहीं, स्वयं नियमित भागीदार होकर, प्रत्यक्ष करो । अन्य लोग उदाहरण से सीखें, तो सीखें।

- **एसडीजी 3 :स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करना और सभी के लिए स्वस्थ जीवन को बढावा देना़**

गांधीजी ने कहा था कि जीवन में स्वच्छता का स्थान सर्वोच्च है इसलिये गरीबी के कारण या उसकी आड़ में कोई भी शहर स्वच्छता की व्यवस्था से मुक्ति नहीं पा सकता। जो भी मनुष्य थूक कर वायु तथा जमीन को दूषित करता है या जमीन पर कचरा फेंकता है वह प्रकृति के विरुद्ध पाप करता है। हम स्नान करने में आनन्द महसूस करते हैं किन्तु कुआ जलाशय अथवा नदी को मल त्याग द्वारा गंदा करते हैं। हमें इन आदतों को पापाचार मानना चाहिये। हमारी उपरोक्त आदतों के कारण हमारे गांव तथा नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं। ऐसी अस्वच्छता बीमारियों का प्रसार करती हैं।

"स्वास्थ्य ही वास्तविक धन है न कि सोने और चांदी के टुकड़े।" एमके गांधी जब स्वास्थ्य के संदर्भ में गांधीजी का नाम लिया जाता है, तो उन्हें उद्धृत करना आवश्यक है। वह उस भौतिकवाद को दूर करने में विश्वास करते थे जो अक्सर वर्तमान भारत में देखा जाता है। स्वास्थ्य हमेशा वास्तविक धन है और शिक्षा के साथ–साथ लंबे समय तक चलने वाले सतत विकास के लिए आधारशिला के रूप में है।

- **एसडीजी 4 :समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन शिक्षा प्राप्ति के अवसरों की बढ़ावा देना ।**

दुनिया में आज गांधीजी को महान नेता एवं समाज सुधारक के साथ साथ शिक्षा दार्शनिक के रूप में भी जाना जाता हैं. उनका मानना था कि समाज की उन्नति में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका हैं.उनकी शिक्षा कमाई व सीखने के सिद्धांत पर आधारित थी। गांधीजी की शिक्षा नई तालिम अथवा बुनियादी शिक्षा के नाम से भी जानी गई।

गांधीजी शिक्षा के माध्यम से शोषण विहीन समाज का निर्माण करना चाहते थे. जहाँ किसी तरह जाति, वर्ग, लिंग का भेद न हो, सभी समरसता के साथ जी सके. उनका मानना था कि समाज के प्रत्येक सदस्य का शिक्षित होना जरुरी हैं, शिक्षा के बगैर एक आधुनिक समाज का सपना असम्भव ही हैं.गांधीजी का शिक्षा दर्शन बेहद व्यापक एवं जीवनोपयोगी हैं. उन्होंने शिक्षा के मुख्य सिद्धातों, उद्देश्यों तथा शिक्षा की योजना को मूर्त रूप देने का प्रयत्न किया. गांधीजी का आधुनिक शिक्षा दर्शन उन्हें समाज में एक शिक्षाशास्त्री का दर्जा दिलवाता हैं. उन्होंने बुनियादी शिक्षा के क्षेत्र में जो योगदान दिया, वह अद्वितीय था.भारत में शिक्षा को स्वावलंबी बनाने की दिशा में उन्होंने 3H की अवधारणा प्रस्तुत की, गांधी जी का मानना था कि बच्चों को हार्ट, हैण्ड और हेड (भावात्मक, गत्यात्मक और बौद्धिक) शिक्षण कराया जाना चाहिए. जिसमें ये तीनों अंग सक्रिय हो. देश को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाने में शिक्षा एक महत्वपूर्ण टूल हैं जिसकी मदद से हम देश को स्वालम्बी बना सकते हैं.12

- **एसडीजी 5 :लैंगिक समानता प्राप्त करने के साथ ही महिलाओं और लड़कियों को सशक्त करना।**

गांधी न तो नारीवादी थे और न ही नारीवादी विरोधी। वह एक महान आत्मा थे जो भारतीय महिलाओं की दयनीय स्थिति से दुखी थे और उनकी स्थिति का उत्थान करना चाहते थे; दमनकारी रीति–रिवाजों से छुटकारा; और चाहते थे कि वे भारत के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। उन्होंने उपरोक्त कोण से लैंगिक समानता और लैंगिक हिंसा को समाप्त करने की वकालत की और काम किया और कई महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने में सफल रहे।

- **एसडीजी 6 :सभी के लिये स्वच्छता और पानी के सतत् प्रबंधन की उपलब्धता सुनिश्चित करना।**

गांधी जी ने एक बार कहा था कि, "हिंदुस्तानियों पर अक्सर यह आरोप लगाया जाता रहा है कि उनकी आदतें बहुत ही बेहुदा होती हैं और वे अपने घर तथा आस–पड़ोस को साफ सुथरा नहीं रखते हैं.... लेकिन मुझे कुछ कड़वे अनुभव थे। मैंने देखा कि मैं जनता को सफाई के प्रति उनके कर्तव्यों को उतनी आसानी से नहीं गिना पा रहा था जितनी आसानी से उनको उनके अधिकारों के बारे में बता रहा था। कुछ जगहों पर तो

मेरा तिरस्कार भी किया गया, पर कुछ जगहों पर मुझे विनम्र उदासीनता मिली। अपने आस पड़ोस को साफ रखने के लिए लोगों को मानसिक तौर पर तैयार होना बहुत ही ज्यादा था। इस काम के लिए लोगों से पैसों की उम्मीद रखने का तो कोई सवाल ही नहीं था। इन अनुभवों से मुझे पहले से कहीं बेहतर सबक मिला कि असीमित धैर्य के बिना लोगों से कोई भी काम करवाना असंभव था। यह सुधारक है जो कि सुधार को लेकर चिंतित है, न कि एक समाज, जिससे उसको विरोध, घृणा और यहां तक कि प्राणघातक उत्पीड़न के सिवा कुछ भी बेहतर चीज पाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।"

- **एसडीजी 7 :सस्ती, विश्वसनीय, टिकाऊ और आधुनिक ऊर्जा तक पहुँच सुनिश्चित करना।**

प्रकृति लाखों अरबों वर्षों से पृथ्वी पर जीवन का पालन पोषण करती आ रही है और भविष्य में भी ऐसा करती रहेगी। पृथ्वी की इसी क्षमता को हमने परिस्थितिकी अथवा पर्यावरण की संज्ञा दी है। वर्तमान मानवीय गतिविधियों द्वारा निरंतर इस प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न की जाती रही है जिसे मनुष्य ने वृद्धि, विकास व आधुनिकीकरण जैसे शब्दों में स्वयं की प्रगति को चिन्हित किया है। अंत में यही प्रगति मानव का प्रकृति के संसाधनों का अति दोहन सिद्ध हुआ तथा मानवीय चेतना के बौद्धिक प्रयासों ने इसे सुधार कर सतत विकास के रूप में सही करने का प्रयास किया है।

- **एसडीजी 8ः सभी के लिये निरंतर समावेशी और सतत् आर्थिक विकास, पूर्ण और उत्पादक रोज़गार तथा बेहतर कार्य को बढ़ावा देना।**

महात्मा गांधी के कई बयान हैं जिन्हें टिकाऊ विकास के लिए उनके विश्वव्यापी दृष्टिकोण के रूप में उद्धृत किया जा सकता है। यूरोपीय संस्कृति के संदर्भ में दिए गए उनके एक बयान की प्रासंगिकता आज पूरे मानव समाज को है। उन्होंने 1931 में लिखा था कि भौतिक सुख और आराम के साधनों के निर्माण और उनकी निरंतर खोज में लगे रहना ही अपने आप में एक बुराई है।उन्होंने कहा कि मैं यह कहने का साहस करता हूं कि यूरोपीय लोगों को अपने दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करना होगा। गांधीजी यह चिंतन उस समय करतें है जब सतत् विकास का उद्भव भी नहीं हुआ था।

- **एसडीजी 9ः लचीले बुनियादी ढाँचे, समावेशी और सतत् औद्योगीकरण को बढ़ावा देना और नवोन्मेष को प्रोत्साहित करना।**

गांधी जी का कहना था कि जहाँ मानव श्रम द्वारा काम संभव नही हों तभी जन उपयोगी भारी भरकम कामों को मशीनों से कराया जावे। कार्य राज्य की अधिकारिता में हों तथा जन–कल्याण उसका उद्देष्य हो। केन्द्रीकृत तथा विकेन्द्रीकृत तरीकों से उत्पादन किया जाए। आय तथा धन का वितरण समान हो तथा जन साधारण के हित साधे जा सकें। गांधी जी के अनुसार मशीनीकरण तभी उपयोगी है जब काम करने वाले व्यक्तियों की संख्या कम तथा जल्दी कार्य पूरा करने की अनिवार्यता हो। भारत में मजदूरों की संख्या बहुत अधिक है इसलिए मशीनों का उपयोग हानिकारक है। इस सोच के कारण वे मशीनों के प्रति अत्याधिक रूचि के खिलाफ थे। वे ऐसे उपकरणों के पक्षधर थे जो अनावश्यक मानव – श्रम को कम करते हैं। वे विशाल उत्पादन नही अपितु बहु–श्रमिक उत्पादन चाहते थे।

- **एसडीजी 10 :देशों के बीच और भीतर असमानता को कम करना।**

हम सभी 1930 के गांधी जी के ऐतिहासिक दांडी मार्च से परिचित हैं। इसके जरिए उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों पर आम लोगों के अधिकारों पर जोर दिया था। नमक एक महत्वपूर्ण और बुनियादी प्राकृतिक जरूरत है। ब्रिटिश साम्राज्य संसाधनों पर अपना एकाधिकार रखता था और उन्हें उनके वैध मालिकों की पहुंच से वंचित रखता था। बुनियादी संसाधनों से आम लोगों को दूर रखना उनकी अस्थिर विकास की रणनीति का हिस्सा था यह गांधी का अपना ठेठ तरीका ही था जब उनसे लंदन में पूछा गया था कि क्या एक लंगोट और हल्का शॉल ठिठुराने वाली सर्दी के दिन के लिए पर्याप्त हैं, तब वे सम्राट से उनके भव्य, गर्म और ठाठदार कपड़ों के साथ लिपटे होने के समय मिल रहे थे। तब गांधी ने अपनी आंखों में हल्की चमक के साथ कहा था, 'आपने तो हम

दोनों को सर्दी से बचाने लायक कपड़े पहन रखे हैं।' यह कथन असमानता को व्यक्त करने व विकसित व गरीब राष्ट्रों की असमानता के लिए पर्याप्त था।

- **एसडीजी 11: सुरक्षित, लचीले और टिकाऊ शहर और मानव बस्तियों का निर्माण।**
  - **आश्रम शैली**

गाँधी का आश्रम एक साथ उनका रहने का स्थान, कार्यालय, चिकित्सालय सामुदायिक रसोईघर (किचन, जिसे रसोड़ा कहते थे,) सामूहिक श्रम की प्रयोगशाला थी। जैसे आश्रम के सब सदस्य सब काम खुद करते, जैसे आटा पीसना, सब्जी काटना, रसोई बनाना, पेड़ लगाना, दूध की डेयरी चलाना, टट्टियाँ साफ करना, मैला खेतों में खाद की तरह डालना, खेती करना, अपने कपड़े आप धोना, सिलना, इस्त्री करना, बाल काटना, एक दूसरे को पढ़ाना–सिखाना, पास के गाँव के लोगों की सेवा करना आदि बारी–बारी से करते थे। कोई काम न छोटा था न बड़ा । वहाँ रहने वाला कोई बड़ा नहीं था। न छोटा, न गोरा, न काला।

- **एसडीजी 12: स्थायी खपत और उत्पादन पैटर्न को सुनिश्चित करना।**

भारत में गरीबी, बेरोजगारी, आय की असमानता, भेद–भाव इत्यादि को देखते हुए गांधी जी ने चरखे के उपयोग को, प्रतीक के रुप में, प्रोत्साहित किया था। उनका उद्देष्य, खादी तथा ग्राम आधारित उद्योगों को प्रोत्साहित कर बेरोजगारी तथा गरीबी को कम करना था। गांधी जी का पूरा जीवन तथा उनके समस्त कार्य, मानवता के लिए पर्यावरण सम्बन्धी विरासत हैं। उन्होंने जीवन पर्यन्त, व्यक्तिगत जीवन शैली द्वारा, समग्र विकास की अवधारणा को प्रतिपादित किया। यद्यपि उनका लगभग सम्पूर्ण जीवन ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध संर्घष में बीता, किन्तु वे हमेषा प्रकृति तथा शान्ति से जुड़े रहे। उनकी ताकत, उनका आत्मबल था। उनका संदेश पर्यावरण संरक्षण तथा समग्र विकास आधारित था। उनके सन्देष, भारत ही नही अपित सम्पूर्ण विश्व के लिए आज भी उपयोगी हैं।

- **एसडीजी 13 :जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निपटने के लिये तत्काल कार्रवाई करना।**

दुनिया में अकाल और पानी की कमी के संदर्भ में महात्मा गांधी के विचारों को याद करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। आजादी के लिए संघर्ष के दौरान वह गुजरात के काठियावाड क्षेत्र में होने वाले अकालों पर भी काफी चिंतित थे। पानी की कमी के मुद्दे पर उन्होंने सभी रियासतों को सलाह दी थी कि सभी को एक संघ बनाकर दीर्घकालिक उपाय करने चाहिए और खाली भूमि पर पेड़ लगाने चाहिए। उन्होंने बड़े पैमाने पर वनों के काटने का भी विरोध किया था। आज इक्कीसवीं सदी में गांधीजी की बात और भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो गई है। अंग्रजों ने वनों को बस धन कमाने का जरिया ही समझा था। इसके साथ ही गांधीजी ने वर्षा जल के संचयन पर भी जोर दिया। 1947 में दिल्ली में प्रार्थना में बोलते समय उन्होंने बारिश के पानी के प्रयोग की वकालत की थी और इससे फसलों की सिंचाई पर जोर दिया। किसानों पर 2006 में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में स्वामीनाथन आयोग ने भी सिंचाई की समस्या को हल करने के लिए बारिश के पानी के उपयोग की सिफारिश की थी।

- **एसडीजी 14 :स्थायी सतत् विकास के लिये महासागरों, समुद्रों और समुद्री संसाधनों का संरक्षण और उपयोग।**

अपने एक लेख "की टु हेल्थ" (स्वास्थ्य कुंजी) में उन्होंने साफ हवा कि जरूरत पर रोशनी डाली। इसमें साफ वायु पर एक अलग से अध्याय है जिसमें कहा गया है कि शरीर को तीन प्रकार के प्राकृतिक पोषण की आवश्यकता होती है हवा, पानी और भोजन लेकिन साफ हवा सबसे आवश्यक है।

- **एसडीजी 15: सतत् उपयोग को बढ़ावा देने वाले स्थलीय पारिस्थितिकीय प्रणालियों, सुरक्षित जंगलों, भूमि क्षरण और जैव–विविधता के बढ़ते नुकसान को रोकने का प्रयास करना।**

गाँधी का आश्रमशैली भी उनकी पर्यावरणीय संवेदना को जानने के लिए पर्याप्त है आश्रम के लिए एक साथ उनका रहने का स्थान, कार्यालय, चिकित्सालय सामुदायिक रसोईघर, सामूहिक श्रम की प्रयोगशाला थी। जैसे आश्रम के सब सदस्य सब काम खुद करते, जैसे आटा पीसना, सब्जी काटना, रसोई बनाना, पेड़ लगाना,

दूध की डेयरी चलाना, टट्टियाँ साफ करना, मैला खेतों में खाद की तरह डालना, खेती करना, अपने कपड़े आप धोना, सिलना, इस्त्री करना, बाल काटना, एक दूसरे को पढ़ाना–सिखाना, पास के गाँव के लोगों की सेवा करना आदि बारी–बारी से करते थे। कोई काम न छोटा था न बड़ा । वहाँ रहने वाला कोई बड़ा नहीं था सामुदायिक कृषि, जैविक कृषि, भूमी संरक्षण की जो अवधारणा वर्तमान समय में प्रचलन में हैं वे गांधीजी ने अपने आश्रम पद्धति में अपना लिये थे। जो सतत् विकास से बढकर मानवीय उत्थान की शैली थी। 1912 में टॉल्स्टॉय फार्म में दूध के बारे में एक चर्चा में, श्री कालेनबाख ने गांधी से कहा, 'हम लगातार दूध के हानिकारक प्रभावों के बारे में बात करते हैं। फिर हम इसे क्यों नहीं छोड़ देते? यह निश्चित रूप से जरूरी नहीं है।' गांधी ने इस सुझाव का गर्मजोशी से स्वागत किया और उन्होंने वहीं पर दूध छोड़ने का संकल्प लिया यह विचार वर्तमान समय में विकसित वीगन शैली में मेल खाते है।

- **एसडीजी 16ः सतत् विकास के लिये शांतिपूर्ण और समावेशी समितियों को बढ़ावा देने के साथ ही साथ सभी स्तरों पर इन्हें प्रभावी, जवाबदेहपूर्ण बनाना ताकि सभी के लिये न्याय सुनिश्चित हो सके।**

गांधीजी का सतत् विकास नैतिक सिद्धान्तों पर अवश्य आधारित था। परन्तु उनका अपनी देह तथा दिमाग पर पूर्ण नियंत्रण था। इसलिए उन्होंने कभी भी ऐसा कोई उपदेश नही दिया जिसका वे अपने व्यक्तिगत जीवन में स्वयं पालन नहीं करते हों। यही उनका प्रकृति चिन्तन है। गांधीजी के इस विचार को विश्व बैंक और कई प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों ने प्रतिध्वनित किया है, जहाँ उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया है कि पिरामिड के आधार तक पहुँचना महत्त्वपूर्ण है। किसी देश के समृद्धि का आकलन उसकी जनसंख्या के अंतिम श्रेणी के जीवन स्तर को माप कर किया जा सकता है। केंद्र में समाज के सबसे कमज़ोर वर्ग की देखभाल करने का विचार है। सीढ़ी के निचले पायदान पर स्थित व्यक्ति को ऊपर उठाया जाता है, तभी देश व विश्व समाज का सतत् विकास हो संभव है।

- **एसडीजी 17ः सतत् विकास के लिये वैश्विक भागीदारी को पुनर्जीवित करने के अतिरिक्त कार्यान्वयन के साधनों को मजबूत बनाना।**

महात्मा गांधी एक बहुआयामी व्यक्ति थे। वह राष्ट्रवादी और अंतर्राष्ट्रीयवादी थे; एक राजनीतिक नेता और एक आध्यात्मिक गुरु; एक लेखक एक विचारक और एक कार्यकर्ता; एक व्यक्ति जो भारत की परंपराओं और सभ्यता के साथ सहज हैं और फिर भी सामाजिक सुधार और परिवर्तन के लिए एक आतुर क्रांतिकारी है।

**निष्कर्ष**

गांधीजी ने कहा था कि "आधुनिक शहरी औद्योगिक सभ्यता में ही उसके विनाश के बीज निहित हैं"पर्यावरण व सतत विकास दोनों एक बहुआयामी व गतिशील अवधारणा है। इसमें पृथ्वी की ग्रहण क्षमता की सीमाओं के अंदर विकास की बात की जाती रही है। वैज्ञानिक रॉकल कारशन की पुस्तक साइलेंट –स्प्रिंग तथा वर्ष 1968 में जीव विज्ञान की पुस्तक से सतत विकास शब्द का उद्भव हुआ है जिसे लोकप्रिय रूप से आयोग ने अपनी ब्रुंडलैंड रिपोर्ट 1987 में किया। इसमें विकास की परिभाषा देते हुए कहा गया है कि जो भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति से बिना कोई समझौता किए वर्तमान की आवश्यकता पूरी करता है, वही सतत विकास है। हाल ही में विकास की अवधारणा को आगे बढ़ाते हुए यूएनओ द्वारा महासभा के 70 वें सत्र में वर्ष 2030 तक विकास हेतु एजेंडा के तहत विकास लक्ष्य स्वीकृत किए गए हैं, जिसमें मुख्य नारा है। कोई पीछे ना छूटे। यह कथन गांधी जी की विचारो से मेल खाता है जिन्होंने सर्वोदय के सिद्धांत के द्वारा बहुत पहले ही इन लक्ष्यो से दुनिया का परिचय करवा दिया था। विकास की अवधारणा पर बल आर्थिक विकास नीतियों में पर्यावरण विचारों को केंद्रीय विषय में लाने के लिए दिया जाता है। इस अवधारणा से पहले ही भारतीय संस्कृति सदैव सतत विकास की हिमायती रही है। अथर्ववेद में वर्णित है भूमि पुत्रों है प्रिया। इस भूमि को हम माता मानते हैं जिसकी सेवा पुत्र के समान की जाती है। यह विचारधारा पश्चिमी आर्थिक विकास के मॉडल को अस्वीकार करती है। गांधीजी भारतीय संस्कृति के प्रतीक थे जिन्होंने महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी के जीव दया अहिंसा आदि विचारों से प्रेरणा ली है। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण सतत विकास को लेकर प्रेरणा दिखाई है। गांधीजी एक

यथार्थवादी विचारक थे जिन्होंने व्यवहारिक तौर पर राजनीतिक आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से सतत विकास व पर्यावरण संरक्षण का स्थाई रास्ता दिखाया है। गांधी जी द्वारा प्रदर्शित लक्ष्यों में सामुदायिक भावना को जन आंदोलन में क्रियान्वित करने की क्षमता है। गांधी जी द्वारा दिए गए अनेक रचनात्मक कार्यक्रम सतत् विकास का एक ब्लूप्रिंट है।

जैसा की वर्तमान प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का कहना है कि "मानवता, सतत विकास या आर्थिक आत्मनिर्भरता, गांधी जी के पास सबके लिए समाधान थे। भारत गांधी जी के सपनों को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। बापू के व्यक्तित्व, विचार और आदर्श हमे सशक्त, सक्षम और समृद्ध न्यू इंडिया के निर्माण के लिए प्रेरित करते रहेंगे"

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**


1. महात्मा गॉधीः आदर्श भारत की रूपरेखा, राठी प्रकाशन, जोधपुर सन् 1948
2. https://www.unep.org/
3. https://www.downtoearth.org.in/
4. https://www.unenvironment.org/resources/report/
5. https://www.unenvironment.org/resources/report/
6. https://sdgs.un.org/goals
7. सुन्दरलाल बहुगुणाः धरती की पुकार, नई दिल्ली राधाकृष्णा प्रकाशन प्राईवेट लिमिटेड सन् 2007
8. महात्मा गॉधीः हिन्द स्वराज, सस्ता साहित्य, मण्डल, न्यू दिल्ली, 1958
9. प्रकाशन विभागः सम्पूर्ण गांधी वांगमय, 78 खण्ड, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्लीः सलेक्टेड वर्क्स आफ महात्मा गांधी, खण्ड 10, प्रकाषन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, सन् 1963
10. महात्मा गॉधीः रचनात्मक कार्यक्रम नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद सन् 1951
11. महात्मा गॉधीः आरोग्य की कुंजी नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद सन् म्कपजपवदः 2007
12. महात्मा गॉधीः बुनियादी शिक्षा नवजीवन प्रभात मण्डल इलाहाबाद, सन् 1953
13. https://www.mkgandhi.org/
14. महात्मा गॉधीः मेरे सपनों का भारत नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद सन् 1960
15. महात्मा गॉधीः सर्वोदय सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली सन् 1998
16. https://www.teriin.org/teri-hindi
17. महात्मा गॉधीः आरोग्य की कुंजी नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद सन् म्कपजपवदः 2007
18. प्रो0 बी0एम शर्मा, डॉ0 रामकृष्ण दत शर्मा, डॉ0 सविता शर्माः– गांधी दर्शन के विविध आयाम, जयपुर राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी। सन् 2019 (8वां)


❖◆❖